B.A. History Hon's Part-II

Paper: III, Unit-I, Date: 4.08.2020 Lecture No 3

Lession: इल्तुतमिश और रजिया सुल्तान

रजिया सुल्तान का कार्यकाल केवल 1236 से 1240 तक था। मुस्लिम शासनकाल के इतिहास में वह एकमात्र महिला है जिसने राज्यसत्ता का उपयोग किया और तीन वर्षों से अधिक समय तक दिल्ली की गद्दी पर उसका अधिकार रहा। इल्तुतमिश ने अपने शासनकाल में वंशानुगत राजतंत्र की नींव दिल्ली सल्तनत में रखने का प्रयास किया था। अपने बेटों को शासक के रूप में अयोग्य पाते हुए अपनी बेटी रजिया को उत्तराधिकारी मनोनीत किया, जो एक अनोखा प्रयोग था। इल्तुतमिश द्वारा उत्तराधिकारी के रूप में रजिया के मनोनयन को शासक वर्ग ने स्वीकार नहीं किया। उलेमा के मतानुसार इस्लाम में महिला को सुल्तान का पद ग्रहण करने की अनुमति नहीं है। दूसरी ओर सामन्तों का वर्ग एक पुरुष प्रधान समाज में एक महिला की सत्ता के आगे सर झुकाने को तैयार नहीं था। दिल्ली की जनता ने स्वेच्छा से और सक्रिय ढंग से रजिया को सिंहासन पर बैठाया था। रजिया ने सर्वप्रथम निजामुलमुल्क जुनैदी को वजीर के पद से हटा दिया, क्योंकि वह उत्तराधिकारी के संघर्ष में उसका विरोधी था। उसने प्रांतपतियों में भी अपने विरोधियों को हटाकर अपने विश्वासनीय अधिकारियों को नियुक्त किया। इस फेर-बदल से असंतोष और भी बढ़ा। अब यह स्पष्ट होता है कि रजिया के सफल हो जाने पर चालीसा दल का अस्तित्व ही मिट जायेगा। दूसरी ओर उलेमा वर्ग भी रजिया का विरोध करने लगा।

सामंतों में बढ़ते विरोध को देखते हुए रजिया ने एक नयी योजना अपनायी। उसने तुर्क सामंतों की शक्ति को तोड़ने के लिए गैर तुर्क सरदारों को प्रोत्साहन एवं पदोन्नति देना आरंभ किया। एक हबशी सरदार मालिक याकूत को रजिया ने पदोन्नति दी। दूसरी ओर गैर तुर्क सामंतों का नवगठित दल संख्या और अनुभव में तुर्क सामंतों से कमजोर था और रजिया को आवश्यकतानुसार समर्थन देने की स्थिति में नहीं था। रजिया के विरोधियों ने अब उसकी कमजोरी का लाभ उठाने का फैसला किया। मलिक एतगीन इख्तियारुद्दीन और मालिक अल्तूनिया, दो सरदारों ने रजिया को सत्ता से हटाने का षड्यंत्र रचा और उन्हें वजीर का समर्थन भी प्राप्त हो गया। अल्तूनिया ने अपने प्रान्त तबरहिन्द (भटिण्डा) के क्षेत्र में विद्रोह कर दिया। रजिया ने राजधानी का प्रशासन मलिक याकूत को सौंपकर विद्रोह दबाने के लिए प्रस्थान किया। रजिया के राजधानी से दूर जाते ही वजीर द्वारा मालिक याकूत की हत्या कर दी गई और रजिया के सौतेले भाई मुइज्जुद्दीन बहराम शाह को दिल्ली का सुल्तान घोषित कर दिया गया। राजधानी से संपर्क टूट जाने के कारण रजिया की स्थिति कमजोर हो गयी और अल्तूनिया ने रजिया को बंदी बना लिया। रजिया ने अल्तूनिया के असंतोष का लाभ उठाकर उसे अपना समर्थक बनाया। उसने अल्तूनिया से विवाह कर लिया और दोनों की सम्मिलित सेना ने दिल्ली पर चढ़ाई कर दी परन्तु वे युद्ध में पराजित हो गये और वापस भटिण्डा लौटते हुए उन्हें डाकुओं द्वारा कैथल के पास मार दिया गया। इस प्रकार चार वर्षों से भी कम में रजिया की सत्ता का अंत हो गया।

मध्यकालीन भारत में किसी महिला द्वारा राजसत्ता का उपभोग का यह एकमात्र उदाहरण है। पुनः एक ऐसे सुल्तान का लु मा के उदाहरण प्रस्तुत करती है जिसे जनता ने सुल्तान की गद्दी पर आसीन किया। इस दृष्टि से

मुगलों को घृणित दृष्टि से देखते थे। अबीसीनिया के लोग भी अरबों से घृणा करते थे। भारतीय मुसलमान विदेशी मुसलमानों के प्रति ईर्ष्यालु थे। भिन्न-भिन्न वर्गों तथा सम्प्रदायों में भेद-भाव के कारण शासन-व्यवस्था बिगड़ने लगी।

∴ महमूद गवाँ की हत्या : कुछ लोग मुहम्मद गवाँ के उत्तम शासन प्रबन्ध तथा कार्यों को देख उससे ईर्ष्या करने लगे थे। महमूद गवाँ की हत्या से साम्राज्य पर बहुत बड़ा आघात हुआ। वह एक कुशल राजनीतिज्ञ था। इस योग्य मंत्री के बिना राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। प्रांतीय गवर्नर भी विद्रोह करने लगे।

∴ महमूदशाह का दुराचरण : का जीवन भ्रष्ट तथा विलासी था। वह आलसी भी था। उसके दरबार में चापलूसों का जमघट रहता था। वह शराब पीकर सज्जारहित होकर सड़क में घूमता था। इसके कर्मचारियों तथा प्रजा पर विपरीत प्रभाव पड़ता था। बरार के गवर्नर इमादुलमुल्क ने विद्रोह आरंभ कर दिया। इसके बाद अन्य राज्य भी विद्रोह करने लगे।

∴ अमीर बरीद का प्रभाव : बहमनी राज्य के पतन का एक कारण महमूदशाह का मंत्री बरीद था। 1578 ई० में अहमदशाह की मृत्यु के बाद कई शासक बने पर उनकी भी वास्तविक शक्ति मंत्री अमीर बरीद के हाथ में आ गई थी। वह सुल्तान कलीम उल्लाह का अन्त करके स्वयं सुल्तान बन गया था। वह स्वेच्छापूर्वक राज्य संचालन करता था।

∴ विजयनगर से लगातार युद्ध : विजय नगर साम्राज्य से बराबर युद्ध चला करता था। उस समय दक्षिण में दो बड़े राज्य थे। एक हिन्दुओं का तथा दूसरा मुसलमानों का। ये राज्य आपस में लड़ा करते थे। युद्ध में लगे रहकर जनता की ओर से विमुख रहे। शासन में कोई स्थायी सुधार नहीं हुआ। निरन्तर युद्धों से साम्राज्य का पतन अवश्यम्भावी हो गया।

∴ हिन्दुओं का विरोध : हिन्दु दक्षिण में अपना राज्य चाहते थे। मुसलमानों के अत्याचारों से हिन्दु परेशान थे। मुसलमानों में धार्मिक असहिष्णुता थी। मंदिरों को गिराते तथा अनेक अत्याचार करते थे। हिन्दुओं ने सदैव मुस्लिम शासकों का विरोध किया, परिणामतः बहमनी राज्य का पतन सामने आया।

हम यह कह सकते हैं कि बहमनी राज्य में सामाजिक, आर्थिक धार्मिक का साम्राज्य ठीक नहीं था, उसके प्रति मुहम्मद तुगलक का शासन व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त नहीं था, जिससे शासन सामान, प्रजा एवं शासन तंत्र अस्त व्यस्त थी।

डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर

(1)

B.A. History Hon's Part-II

Paper: III, Unit: III, Date: 4.8.2020 Letcure No: 2

Lession: बहमनी साम्राज्य की उत्पत्ति

मुहम्मद तुगलक के शासन-काल में ही तुगलक राज्य का छिन्न-भिन्न होने लगा था। साम्राज्य में जगह-जगह पर विद्रोह उभरने लगे थे। प्रान्तीय गवर्नर भी स्वतंत्र हो गये थे। दक्षिण में निवास करने वाले विदेशी अमीरों तथा सरदारों ने इस्माईल मक्ख के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया था। इस्माईल मक्ख को राजा बना दिया गया तथा दौलताबाद को राजधानी घोषित कर दिया गया। इस्माईल मक्ख ने हसन जफर नाम के व्यक्ति को अपना उत्तराधिकारी बनाया।

बहमनी नाम क्यों पड़ा: हसन ने अपने राज्य का नाम बहमनी रखा था। यह एक विवादग्रस्त प्रश्न था। वीर सेनानी हसन फारस के बहमन शाह का सम्बन्धी था, जिसके नाम से बहमनी वंश नाम पड़ा। उसने अलाउद्दीन हसन बहमन शाह की उपाधि धारण की तथा गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाया था। उसने अपने राज्य को जागीरों में बाँट दिया था तथा प्रत्येक अमीर को जागीर दी थी। उन लोगों ने भी वचन दिया था कि अवसर आने पर वे सुल्तान को सैनिक सहायता प्रदान करेंगे।

फरिश्ता का मत: फरिश्ता का मत है हसन 'दिल्ली के गंग नामक ज्योतिषी के यहाँ था। यह ब्राह्मण मुहम्मद तुगलक का कृपापात्र था। एक बार हसन को स्वामी का खेत जोतते हुए स्वर्ण मुद्राओं का कलश मिला। हसन ने स्वामी को दे दिया। ब्राह्मण ने प्रसन्न होकर उसे सरकारी नौकरी दिलवा दी। यह भी कहा जाता है कि ब्राह्मण हसन के सुल्तान होने की भविष्यवाणी की थी और प्रार्थना की थी कि राजा होने पर वह उसे प्रधानमंत्री बना ले। हसन ने उसे प्रधानमंत्री बनाया था। उसने सुल्तान होने पर अपना नाम 'ब्रह्मणी' या बहमनी रखा था।

अन्य मत: दूसरा मत के विचारकों का कथन है बुरहाने मआसीर के अनुसार अपने वंश के कारण सुल्तान बहमन कहा जाता था। सिक्कों तथा लेखों से इस बात की पुष्टि नहीं होती, कि उसने अपने राज्य का नाम ब्राह्मणी रखा था। स्मिथ का कथन है कि हसन कट्टर तथा धर्मान्ध, मुसलमान था और इस स्थिति में वह अपने को ब्राह्मण नहीं कह सकता था। हसन फारस के बादशाह बहमन बिन इस्फन्दियार का वंशज था, उसी के नाम पर इस वंश का नाम पड़ा। बहमनी राज्य पर चौदह सुल्तानों ने राज्य किया। इसका संस्थापक हसन जफर माना जाता है जिसकी मृत्यु 1359 ई० में हो गई। 1463 ई० में निजामशाह की मृत्यु के बाद उसके छोटे भाई मुहम्मदशाह तृतीय को बहमनी साम्राज्य की गद्दी मिली। किन्तु वास्तविक शक्ति उसके मंत्री महमूद ख्वाँ के हाथ में थी। वह विदेशी था किन्तु काफी योग्य था। किन्तु विजयनगर से मिली भगत का दोष लगाकर मुहम्मदशाह ने उसे मरवा दिया। ख्वाँ की मौत से बहमनी साम्राज्य की एकता और शक्ति क्षीण होने लगी और 1526 ई० तक बहमनी राज्य का अंत हो गया।

राजाओं की विलासिता, आन्तरिक दुर्बलताओं, गुटबन्दी अन्य राज्यों से युद्ध इत्यादि इसके पतन के मुख्य कारण थे।

राज्य में विभिन्न वर्गों तथा सम्प्रदायों की उत्पत्ति: बहमनी राज्य में भिन्न-भिन्न वर्ग तथा सम्प्रदाय पैदा हो गये थे। दरबार में अमीरों के बीच दो दल हो गये थे। इनमें एक दल विदेशी अमीरों तथा दूसरा स्थानीय अमीरों का था। इन दलों में संघर्ष चलता रहता था। अफगानों तथा तुर्कों में भी भेद-भाव चलता रहता था। तुर्क लोग

से वह अलाउद्दीन खिलजी और मुहम्मद बिन तुगलक जैसे महत्वपूर्ण शासकों की अग्रगामी प्रतीत होती है। जब ख्वारिज्म के शासक जलालुद्दीन [illegible] को मंगोलों ने निष्कासित कर दिया तो वह रजिया से मंगोलों के विरुद्ध सैनिक गठबंधन का प्रस्ताव लेकर भारत आया। रजिया ने उसे भारत में शरण दी। इस प्रकार उसने अपने पिता इल्तुतमिश की नीति को ही अपनाया और मंगोलों से दिल्ली सल्तनत को सुरक्षित [illegible]। यह आश्चर्यजनक बात है कि राजनैतिक दूरदर्शिता और योग्यता प्राप्त होने के बावजूद भी एक शासक के रूप में रजिया सफल नहीं रही। उसे राज्य से वंचित होना पड़ा। रजिया को न तो सामंत वर्ग और न उलेमा वर्ग ने ही खुले दिल से स्वीकार किया। चूँकि ये दोनों वर्ग अत्यन्त प्रभावशाली थे इसलिए इनका विरोध रजिया के लिए समस्या का कारण बन गया। ऐसा कहा जाता है कि रजिया सुल्तान की असफलता का एकमात्र कारण उसका एक महिला होना था। राजनैतिक दूरदर्शिता, कूटनीतिक योग्यता, वीरता, दृढ़निश्चय आदि जैसे गुण रजिया में वर्तमान थे। यही कारण था कि इल्तुतमिश जैसे व्यक्ति ने उसे अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया था। अतः एक महिला होना ही रजिया की असफलता का मुख्य कारण प्रतीत होता है। रजिया की पराजय ने चालीसा दल की स्थिति को और मजबूत किया। मगर जल्दी ही बहराम और उसके सरदारों के बीच मतभेद आरंभ हो गया और दो वर्षों के संक्षिप्त शासनकाल के पश्चात् बहराम को चालीसा दल के सरदारों ने सत्ता से हटाकर कैद कर लिया।

बहराम के पश्चात् अलाउद्दीन मसूद शाह को शासक बनाया गया जो इल्तुतमिश के बेटे फिरोज का पुत्र था। नायब-ए-ममलिकात के रूप में कुतुबुद्दीन हसन की नियुक्ति हुई और मुहज्जबुद्दीन की हत्या करके अबूबक्र को वजीर बनाया गया। 1246 में उसके मसूद शाह के स्थान पर नासिरुद्दीन महमूद को सुल्तान घोषित कर दिया। नासिरुद्दीन महमूद के राज्यारोहण के साथ ही प्रशासन पर सामंतों का पूर्ण प्रभाव स्थापित हो गया था। [illegible] वर्षों के अन्दर चार शासक दिल्ली की गद्दी पर बैठाए गए थे और सभी का अन्त अप्रिय ढंग से हुआ था। उसने अपने मलिक-नायब बलबन को सारी सत्ता सौंप दी। नासिरुद्दीन के बीस वर्षीय शासनकाल में बलबन ही प्रभावशाली रूप में राज्य का सर्वेसर्वा बना रहा। केवल कुछ समय के लिए (1252-53) में वह अपने पद से हटाया गया और इमादुद्दीन रैहान को यह पद मिला। यह पहला भारतीय मुसलमान था जो इस उच्च पद को प्राप्त कर पाया। बलबन ने जल्दी ही यह पद पुनः प्राप्त कर लिया। बलबन भी नासिरुद्दीन के प्रति सम्मानपूर्ण व्यवहार करता रहा। उसने अपनी एक बेटी का विवाह नासिरुद्दीन महमूद के साथ कर दिया था और सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेने में वह सुल्तान से परामर्श किया करता था। इस प्रकार नासिरुद्दीन महमूद के शासन काल में शांति बनी रही और इसके साथ ही साथ सामंतों का प्रभुत्व सल्तनत की राजनीति में इसी तरह स्थापित हो गया। 1265 में नासिरुद्दीन की मृत्यु पर बलबन ने सुल्तान का पद ग्रहण कर लिया।

डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर